Bihar Board Class 6 Hindi Notes Chapter 14 डॉ. भीमराव अम्बेदकर

डॉ. भीमराव अम्बेदकर Summary in Hindi

पाठ का सार-संक्षेप

मध्यप्रदेश के महानगर में रामजी नाम के एक सूबेदार मेजर थे। 14 अप्रिल, 1891 ई० को सूबेदार के घर में एक बालक ने जन्म लिया। यह उनकी चौदहवीं संतान थी। जब यह बालक पाँच वर्ष का हुआ तब उसकी माँ का स्वर्गवास हो गया। बालक की माँ का नाम मीराबाई था। बालक के पालन-पोषण का भार उसकी चाची के कंधों पर आ गया जो प्यार से बच्चे को 'मीना' कहकर बुलाती थी। बड़ा होकर वही बालक भीमराव रामजी अम्बेडकर कहलाया। भीमराव की स्कूली शिक्षा रत्नागिरि नामक शहर में स्थित एक मराठी स्कूल से आरंभ हुयी। बाद में भीमराव के पिता सतारा आ गये और अपने बच्चे का दाखिला एक सरकारी स्कूल में करा दिया।

सन् 1905 में भीमराव का विवाह रामाबाई नाम की कन्या से कर दिया गया। उस समय कन्या की उम्र मात्र नौ वर्ष की थी। इस बीच भीमराव के पिता बम्बई आ गये और वहाँ के एलफिंस्टन स्कूल में अपने बेटे का नाम लिखा दिया जहाँ से सन् 1907 में भीमराव ने मैट्रिक की परीक्षा पास की। महार जाति के लिये भीमराव का मैट्रिक पास करना एक अत्यन्त गौरव की बात थी। भीमराव एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ने लगे जहाँ से सन् 1913 में इन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की । बड़ौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने दरबार में नौकरी दे दी पर दुर्भाग्यवश इसी वर्ष भीमराव के पिता का निध न हो गया।

बड़ौदा के महाराज की अनुकम्पा और प्यार युवा भीमराव पर अत्यधि क था पर दरबार के कटरपंथी उनसे ईर्ष्या और घृणा करते थे। अतः निराश होकर भीमराव ने अपनी उच्च शिक्षा जारी रखने के लिये अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दखिला ले लिया। बडौदा के महाजन ने अपनी ओर से छात्रवृत्ति देकर भीमराव के आगे की पढ़ाई के लिये सहायता एवं सहयोग दिया। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में भीमराव को प्यार और समानता का व्यवहार मिला और वहाँ से उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण की। विदेश प्रवास के दौरान डा० भीमराव ने दो पुस्तकें लिखीं और उनकी विद्वता की ध क सर्वत्र जम गयीं। इसका प्रतिफल यह हुआ कि डा. अम्बेडकर को मुम्बई के एक कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर लिया गया। किन्तु यहाँ भी डा. भीमराव को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि एक विशेष जातिवर्ग का होने के कारण कट्टरपंथी उनसे घृणा करते थे। निराश होकर डा. भीमराव ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

छुआछूत की समस्या के निदान के लिये उन्होंने एक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। पत्रिका का नाम उन्होंने 'मूकनायक' रखा। पर साधनों के अभाव के कारण पत्रिका ज्यादा दिनों तक चल नहीं पायी और इसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा। इसके बाद डा. भीमराव पढ़ने के लिए लन्दन चले गये और वहाँ से अर्थशास्त्र में डी. एस-सी की उपाधि प्राप्त कर मुंबई लौटे और यहाँ वकालत आरम्भ कर दी। सन् 1927 में इन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। इसी वर्ष ये मुंबई विधान सभा के सदस्य बनाये गये।

सन् 1947 में आजाद भारत में गठित संविधान-सभा के डा. भीमराव सदस्य चुने गये। भारतीय संविधान का प्रारूप (आलेख) इन्हीं की अध्यक्षता में तैयार हुआ जिसमें राष्ट्रीय एकता और अछूतों के उद्धार की

https://www.evidyarthi.in/

समस्या के समाधान पर विशेष बल दिया गया। आजाद भारत की पहली सरकार पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में बनी। डा. भीमराव अम्बेडकर भारत सरकार के पहले कानूनमंत्री बनायें गये। पर पं. जवाहर लाल नेहरू से उनका किसी समस्या को लेकर मतभेद हो गया और उन्होंने 1951 में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

सरकार से अलग होकर डा. भीमराव ने अपना ध्यान अछूतों की सेवा की ओर केन्द्रित किया। फलस्वरूप अछुतों के बीच वे दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय होते गये। रूढ़िवादियों से इन्होंने कभी समझौता नहीं किया। सन् 1955 में इनका झुकाव बौद्ध धर्म की ओर हुआ। एक वर्ष के बाद इन्होंने नागपुर में बौद्ध ध र्म ग्रहण कर लिया। इन्होंने अछूत भाइयों को भी सलाह दी कि वे बौद्ध धर्म अपना लें। पर दुर्भाग्यवश अछूतों और दलितों का यह मसीहा अधिक दिनों तक उनकी सेवा नहीं कर सका और 1956 में ही 6 दिसम्बर को डा. भीमराव अम्बेडकर का निधन हो गया। आज भी इस देश के लोग अछूतों के इस नेता को सम्मान के साथ 'बाबा साहब' कहकर सम्बोधित करते हैं। वे देश के पिछड़े और दलित समाज के प्राण थे।

डा. बाबा साहब एक अध्ययनशील प्राणी थे। उनमें गजब का आत्मबल – था और वे जो सोचते थे उसे कार्य में परिणत करते थे। वे एक ओजस्वी वक्ता थे और तर्क करने की उनमें अद्‌भुत क्षमता थी।

भारतीय समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को छुआछूत के रूप से बाबा साहब ने मुक्ति दिलायी। आने वाली पीढ़ी डा. बाबा साहब अम्बेडकर को उनकी देश-सेवा के लिये सदा स्मरण करती रहेगी।

https://www.evidyarthi.in/